C.W-23.06.2021

पाठ-3

हंस और कछुआ

पाठ का सारांश

• मगध देश में फुल्लोत्पल नामक तालाब थी। संकट और विकट नाम के दो हंस रहते थे। उनका एक मित्र कछुआ तथा बहुत सारे मछलियाँ भी वहाँ रहती। एक बार कुछ मछुआरों ने तालाब में मछलियों और कछुए को देखकर अगले दिन उन्हें पकड़ने की बात कही। संकट और विकट ने यह बात मछलियों तथा कछुए को बताई। कछुआ घबरा गया, उसने हंसों से अपने बचाव के लिए कहा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि वे दोनों एक लकड़ी के सिरों को अपनी-अपनी चोंच में दबा लेंगे और कछुआ लकड़ी को मुँह से बीच में पकड़ लेगा। हंसों ने उसे बोलने के लिए मना किया था और कछुआ मान गया। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे, तो कुछ बच्चे नीचे पतंग उड़ा रहे थे। वे उनके पीछे भागने लगे। कोई कहता कि अगर कछुआ गिरेगा तो वह अपने घर ले जाएगा। कोई कहता कि बेचारा कछुआ से रहा नहीं गया, जैसे ही गुस्से में वह बोलने लगा, वैसे ही वह बोलने लगा वह नीचे गिर गया और मर गया। हमेशा सोच-विचार कर के कार्य करना चाहिए नहीं हमारा भी कछुए जैसा हाल होगा।